HW

28/07/2021

पाठ :- 4

अतिथि तुम कब जाओगे

पाठ का सारांश

अत अतिथि तुम कब जाओगे पाठ लेखक शरद जोशी ने लिखा है। इस पाठ में लेखक ने कहा उन लोगों का वर्णन किया है जो किसी के घर में अतिथि बन के जाते है लेकिन फिर वहीं पर अपना कब्जा बना देते हैं। कुछ लोग अतिथि बन के नहीं आते वह दुसरों को परेशान करने के लिए आते हैं।

बहुत दिनों तक रुक जाते हो और उन लोगों के लिए परेशानी का कारण बन जाते हैं। अच्छे अतिथि वह होते है जो दुसरों के घर में अतिथि की तरह जाते हैं और 2-3 दिन काट कर वापिस आ जाते हैं।

लेखक ने पाठ में उस लोगों को समझाने का प्रयास किया जो लोग अतिथि को इससे नहीं सिरदर्दी बन जाते हैं। परिवार वालों का समय बर्बाद करते हैं, परन्तु उनके अतिथि को इससे कोई असर नहीं पड़ता।

रोज़े अतिथियों को सबक सिखाने के उद्देश्य से लेखक ने इस पाठ की रचना की है।

लेखक ने इस पाठ में यह बताया है कि उसके घर में मेहमान आ जाते हैं और वह जाने का नाम ही नहीं लेते हैं। लेखक रोज़ - रोज़ मेहमाननवाज़ी से परेशान हो रहे थे। रोज़ उसकी पसंद से खाना बनाना और उसकी सेवा करना। लेखक मन ही मन में सोचते थे की अतिथि घर कब जाओगे। लेखक अपने मन ही मन अतिथि से कहता है कि लेखक जानता है कि अतिथि देवता होता है, पर आखिर लेखक भी मनुष्य ही है।

लेखक कहता है कि एक देवता और एक मनुष्य अधिक देर साथ नहीं रहते। देवता दर्शन देकर लौट जाता है।